जीती जागती बात

जसवंत ज़फ़र की प्रतिनिधि कविताएं

अनुवाद

कोमलदीप कौर

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जसवंत ज़फ़र
की पुस्तकें

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जीती जागती बात

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जीती जागती बात

जसवंत ज़फ़र की प्रतिनिधि कविताएं

अनुवाद

कोमलदीप कौर

चेतना प्रकाशन
पंजाबी भवन, लुधियाना

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Jeeti Jagti Baat

Hindi Translation of selected poems of

Jaswant Zafar ©
e-mail : jaszafar@yahoo.com
Translated by
Komaldeep Kaur
90, Rajouri Garden, Barrewal Road, Ludhiana.
Mob. : 95920-87006
komaldeepkaur09@gmail.com

ISBN : 978-81-949326-3-5
Rs. 200/-
2021
Printed and Bound In India

कवर चितर : लवप्रीत

Published by
A Group of
Chetna Parkashan
PUNJABI BHAWAN, LUDHIANA (Pb.) INDIA
KOTKAPURA | CANADA | USA
Ph. 0161-2413613, 2404928, (M) 98152-98459, 98762-07774
Ph.: 95011-45039
Website: www.chetnaparkashan.com
E-mail: chetnaparkashan@gmail.com, gulatipublishersltd@gmail.com

Printer : R.K. Offset, Delhi

All rights reserved

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo copying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the publisher of this book.

follow us on : www.facebook.com/ChetnaParkashan
Follow us on : Instagram / Chetna_Parkashan

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

समर्पण

अपने स्वर्गीय माता पिता
को

–अनुवादक

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अनुक्रम

भूमिका	*–कोमलदीप कौर*	9
डर	....	13
गैलीलियो	....	14
अच्छा या बुरा	....	16
ज़ीरो	....	17
आकाश	....	19
सतरंगी	....	20
मौत	....	21
बंदा	....	22
वृक्ष	....	23
सिद्धार्थ	....	24
पंच रूप	....	25
नानक	....	26
हम नानक के क्या लगते हैं	....	29
जिन मुख लोइन नाहि	....	30
रब	....	32
बाबे गाते	....	34
भाई कन्हैया	....	37
शहीदी शताब्दी	....	39
मुहिउद्दीन से क्षमा सहित	....	41
कवि या कविता	....	43

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ख़तरा	....	45
सूखी बावड़ी	....	46
धरती खड़ी है	....	48
मामी मरी तो	....	50
जुगती	....	52
ज़िन्दगी	....	53
दिवस रात	....	56
अमेरिकी टॉवर गिरने पर	....	58
ये समय	....	60
नौकरशाही	....	61
तरक्की	....	63
बच्चा	....	65
खून पसीना स्याही	....	67
कोख में कत्ल होती लड़कियां	....	69
दाता	....	70
बुरकी (निवाला)	....	71
23 मार्च	....	73
भगत सिंह	....	74
आज़ादी	....	76
कौन	....	78
अजनबी	....	79
खिड़की के अंदर और बाहर	....	80
दूसरा तरफ़	....	81

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कवि अकेला कविता नही लिखता	....	82
अत्याचार	....	83
रेप	....	85
नाजायज़	....	86
और परे	....	87
आकर्षण	....	88
जोड़-तोड़	....	89
छुअन	....	90
निश्चित	....	91
माटी कहे कुम्हार से	....	92
तुम्हारे लिए मैं	....	94
प्रेम	....	95
जाते-जाते	....	96

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

भूमिका

-कोमलदीप कौर

जसवंत ज़फ़र जी की कविताओं से मैं एक पाठक की तरह ही रूबरू हुई थी मगर उनकी कविताओं की सरलता और स्पष्टता ने मुझे उनका प्रशंसक बना दिया। मैं स्नातक तक पंजाबी साहित्य की विद्यार्थी रही हूँ मगर मैं स्वयं आज के समय में लिखी जा रही पंजाबी कविता से दूर ही थी।

2012 के बाद जब मैंने पुनः लिखना आरम्भ किया तो नए सिरे से पंजाबी कविता और कवियों के बारे में जाना।

एक साधारण पाठक की तरह मैं भी पंजाबी कविता में पातर और पाश के बाद किन्ही इक्का दुक्का नामों से ही परिचित थी। किसी कवि मित्र द्वारा भेंट स्वरूप मिलने पर ही जसवंत ज़फ़र जी की पहली पुस्तक 'असीं नानक दे कि लगदे हां' छपने के बहुत बाद में मेरे हाथ आई और कुछ घंटों में ही मैंने इसे पढ़ डाला। उनकी कविताओं ने मेरी पारम्परिक सोच और धार्मिक रुझानों को हिला डाला। प्रमुख पंजाबी आलोचक अमरजीत सिंह ग्रेवाल जसवंत ज़फ़र की पुस्तक असीं नानक दे की लगदे हां कि भूमिका का आरंभ करते हुए कहते हैं कि ये पुस्तक अलग अलग विषय पर लिखी विभिन्न कविताओं का संग्रह ही नहीं, मानवीय मन की यात्रा भी है। एक ऐसी यात्रा जो पूर्व को त्याग से पूर्ति की ओर और पश्चिम को पूर्ति से त्याग की ओर ले जाती है। उनकी ये टिपण्णी अक्षरशः सत्य है। कविता नानक के बारे में अमरजीत सिंह ग्रेवाल लिखते हैं कि ये कविता समाजिक विकास के लिए समाज को निश्चित जीवन मूल्यों, संस्थाओं व परंपराओं की कैद से मुक्ति के लिए इनके निर्माता दमनकारी राजनीति को नंगा करके पुनर्स्थापित करने की वक़ालत करती है।

जसवंत ज़फ़र की कविता नानक मेरी सब से पसंदीदा कविता है, हमारी जड़ हो गयी चेतना पर प्रहार करते हुए वो लिखते हैं:

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

हमारे इन घरों की दीवारों पर
नानक के सोबा सिंह के बनाये चित्र ही टिक सकते
राहों को रद्द कर चलने वाले
खतरनाक नानक की असली तस्वीर का भार
हमारी कोई दीवार नहीं सह सकती।

सच कहूँ यही कविता थी जिसे पढ़ कर मुझे लगा कि इस कविता का केवल पंजाबी पाठकों तक सीमित रह जाना नाइंसाफी होगी और मैंने जोश में ही इस कविता का अनुवाद कर डाला।

कुछ समय बाद जब मैंने बड़ी झिझक के साथ ज़फ़र जी को ये कविता भेजी और बिना अनुमति अनुवाद के लिये माफ़ी मांगी तो ज़फ़र जी ने जिस ख़लूस और स्नेह से मेरा हौसला बढ़ाया वो बताता है कि वो बड़े लेखक ही नहीं बड़े इंसान भी हैं।

उनके इसी प्रोत्साहन से प्रभावित हो मैंने ठान लिया कि उनकी कविताओं का अनुवाद मुझे करना ही है।

अनुवाद का ये मेरा पहला अनुभव था और ज़फ़र जी की कविताओं का अनुवाद मेरे लिए एक यात्रा की तरह था इस यात्रा में मैं कभी 'रब' 'सिद्धार्थ' जैसी कवितायों का अनुवाद करते अध्यात्मक स्वाद से ओत प्रोत हुई और कभी 'मामी मरी तो' जैसी कविता का अनुवाद करते रोयी, कभी 'बच्चा' और 'खून पसीना स्याही' जैसी कविता ने मुझे गृहस्थ जीवन के सुखों का आनंद याद कराया उनकी कविता नई परिभाषाएँ गढ़ती है। वो अच्छा या बुरा कविता में लिखते हैं

हर विश्वास अंधविश्वास होता
आँखों वाला विश्वास नही कुछ और होता
रब कविता में वो लिखते हैं
जैसी जिन्द तैसा गोबिंद

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जैसी जान तैसा भगवान।

उनकी कविताएं हमें अपने इतिहास के नायकों और खलनायकों को नई रोशनी में दिखाती है ।

'नानक', 'भाई कन्हैया', 'भगत सिंह' और मुहिउद्दीन से क्षमा सहित ऐसी ही कविताएं हैं।

उनकी कविता 'भगत सिंह' पढ़ कर सहज ही समझ आता है आज़ादी के सभी शहीदों के लिए एक सा सम्मान होते हुए भी, भगत सिंह के प्रति युवा पीढ़ी का गज़ब का सम्मोहन क्यों है।

भाई कन्हैया कविता सिख धर्म की बुनियादी शिक्षा और उसकी जटिल बारीकियों से संवाद करती है।

जसवंत ज़फ़र की किताब 'असीं नानक दे की लगदे हां' के बारे में परमिंदर सिंह लिखते हैं कि कवि महज़ किसी प्रयोग के लिए प्रयोग नही करता बल्कि अपनी बात को स्पष्टता, संक्षेपता और खूबसूरती से कहने के लिए नई विधियों का उपयोग करता है :

रात मुझे सपने में
दरिया समंदर और चाँद ने आ कर कहा
बंदे बनो
मुझसे पलट कर पूछा न गया
ये बंदा क्या होता है?

ज़फ़र जी कविताओं में भावनाओं का गज़ब संतुलन है उनका यथार्थ ना तो कटार से काटता है ना उनका प्रेम लबालब बहता है। उनका आध्यत्म कोरा समर्पण नहीं ना ही उनकी धार्मिकता अन्धभक्ति है ज़फ़र जी को पढ़ते हुए कविता को भारी भरकम शब्दों के नीचे से निकालना नही पड़ता। उनकी कविता सहज सरल रूप से जीती जागती आपके सामने आ खड़ी होती है। जैसे उनकी कविता छुअन

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

तुमने प्यार से
अपने दोनों हाथों के बीच
मेरा हाथ लिया
दबाया सहलाया

करामात हुई
मेरे दोनों हाथों में से
उदासी की रेखा लुप्त हो गयी

जसवंत ज़फ़र की किताब 'ऐह बंदा की हुंदा' के बारे में सुरजीत पातर लिखते है कि जसवंत ज़फ़र बहुत बारीक अवलोकन वाले दानिशवर हैं। वे कविता ऐसे लिखते हैं जैसे कोई बहुत महंगी वस्तु तोल रहे हैं। जैसे दूसरा छोर कविता

दूसरा छोर दूसरा होता
उल्टा नहीं होता

दूसरे को ठीक जानने के लिए
उसके पास जाना पड़ता
उसकी जगह पर जा कर देखना पड़ता।

जसवंत ज़फ़र 'जब कवि अकेला कविता नही लिखता 'कहते हैं तो वह सृजन, संचार और काव्य प्रकिया को पाठकों से जोड़ते हैं, केवल बौद्धिकता या दार्शनिकता तक सीमित नही करते। इस अनुवाद में मैंने कोशिश की है कि कविताओं की मौलिकता और गुणवत्ता बनी रहे और आशा करती हूँ कि हिन्दी पाठक मेरे इस प्रथम प्रयास का स्वागत करेंगे और ज़फ़र जी की कविताओं का भरपूर आनंद उठाएंगे।

मैं श्री जसवंत ज़फ़र जी की बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे अपनी पूर्ण सहमति दी और इस पूरे कार्य के दौरान अपनी तरह से काम करने की स्वतंत्रता दी।

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

डर

जब किसी से नहीं डरता
डर से तब मैं डरता हूँ
जब मैं किसी को नहीं डराता
डर को तब मैं डराता हूँ
इस तरह मैं हर समय
डरता और डराता रहता
डर के साथ है मेरा रिश्ता
जैसे मेरा मैं से
'मैं' और डर तो साथ हैं जन्में
साथ ही मरते

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

गैलीलियो

पता नहीं उसके हाथ में ज़हर था या सर पर थी तलवार
मरा नहीं, पर था मरने को तैयार
गैलीलियो था अपने समय का सुकरात
उसके पास थी जीती जागती बात
बात थी कि
ये जो धरती माँ के समान है
माँ का अपना स्थान है

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ब्रह्माण्ड तो क्या
सौर परिवार का भी केंद्र नहीं
पर हमसे बात आगे न बढ़ी
हमें तो जीवंत संसार का
या छोटे बड़े प्रसार का
केंद्र होने का भ्रम है
केंद्र बने रहने के लिए हर कर्म है
केंद्र ही बने रहने की चाह में सोचते हैं
कि बस
अहंकार लोभ और क्रोध के जहर की
कॉकटेल पीते हैं
मरने से बहुत डरते हैं
मगर कह नहीं सकते कि हम जीते हैं
अभी हमें धरती माँ की
जीने लायक सन्तानें बनना है
खुद की जगह समझनी
खुद को जगह पर रखना है
फिर कहीं
जीती जागती बात
ने आगे चलना है।

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अच्छा या बुरा

हर विश्वास अन्धविश्वास होता है
आँखों वाला विश्वास
विश्वास नहीं कुछ और होता है
हर जुमला झूठा जुमला होता है
सच्चा जुमला
जुमला नहीं कुछ और होता है
आश्रय तो आश्रय होता है
सच्चा या झूठा नहीं होता
हर श्रद्धा सच्ची श्रद्धा होती है
झूठी श्रद्धा कोई चीज़ नही होती
मनुष्य तो बस
मनुष्य होता है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ज़ीरो

हम ज़ीरो का अंक खोजने वाली
प्राचीन सभ्यता के वर्तमान हैं
सभी ओर से बंद ज़ीरो
हमारा मूलमंत्र बनकर
हमारे खून में ऊँघती फिरती
या कि हमारे माथे के अंदर फंसी हुई है
ज़ीरो किसी भी आकार की हो
छोटी या बड़ी या बहुत बड़ी
ज़ीरो ही रहती
अपना मोल कुछ नहीं होता
जिसके पीछे लग जाती
वो दस गुना हो जाता
चौके के पीछे लगाने पर चौके को चालीस बनाती
सात के पीछे लग कर सत्तर बनाती
ज़ीरो दूसरे के पीछे लग जाने में
अपनी शान समझती
ज़ीरो का किसे के आगे लगने का
कोई अर्थ नहीं होता

अपने ज़ीरो होने का एहसास
सुरक्षित रखने वाले हम

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ज़ीरो की तरह
दूसरों के पीछे लगने के आदी हो गये
हमने कभी सोचा
कि बाईं तरफ के
चमत्कारी अंक के पीछे लग कर
बड़ी रकम बनायेंगे
बाईं तरफ वाला खुद ही ना रहा
तो हम रह गये अकेले छटपटाते
ज़ीरो के ज़ीरो

लंबी उदासी वाले अपने बाबा से
उदासियों का वर नही मांग सकते
क्योंकि हम
ज़ीरो समान गोल परिक्रमा तो कर सकते हैं
उदासियों को नहीं जा सकते
आकाश में अलमस्त नहीं उड़ सकते
परवाज़ नहीं भर सकते
उपग्रह जैसे निश्चित गोल दायरे में ही
घूम सकते हैं
हमारा मार्ग तो हो सकता ज़ीरो जैसा
गोल या वृताकार
जो भूत वही भविष्य
पैराबोलिक पाथ के बारे में नहीं सोच सकते
हमें अनंत व विशाल भविष्य से डर लगता है
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

आकाश

रंग करने के लिए
चाहिए कागज़ कैनवस
या चाहिए कोई दीवार
शब्द होने के लिए
चाहिए चुप्पी
आकाश के बिना नहीं होते
चाँद सूरज तारे
और चुप के बिना सारे
शब्द नहीं होते

ये जो काली लकीरों के
अक्षरों से बने शब्द पढ़ रहे हो
इनके तले चुप का
सफ़ेद सफ़ा है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

सतरंगी

कहानी भले लंबी है
पर अंदर की बात इतनी है
कि धूल, धुंध, धुआँ था
अंधियारा घना था
फिर आंसुओं की झड़ी में
बह गया सारा गर्द-गुबार
और निखर गया समस्त आसमान
आशा की तरह
और
फिर अचानक ज़िन्दगी के आसमान पर
तेरे प्यार का सतरंगी इंद्रधनुष चढ़ आया
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

मौत

जब मैं
दौड़ता भागता
हंसता खेलता
कामकाज़ में व्यस्त होता हूँ
बातें सी करती
मौत थोड़े फासले पर
साथ साथ चलती प्रतीत होती है
हम एक दूसरे को देख कर मुस्कराते हुए
हवाई चुंबन देते हैं
मुझे वो सुन्दर और
भली सी लगती है, ज़िन्दगी जैसी
उस से क्या डर

जब मैं खाली, बासी और ऊबा होता हूँ
खिंचा खिंचा सा,
रब से
सब से
नाराज़ होता हूँ
मौत मुझे बड़ी दूर दिखाई देती
दूसरी तरफ़ मुँह कर खड़ी
नकचढ़ी
करमजली
घिसी पिटी और कुरूप
ज़िन्दगी जैसी
मुझे उस से खौफ़ आता है
बहुत ज़्यादा

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बंदा

मैंने समंदर की ओर बहते दरिया से पूछा
कैसे बह लेते हो तुम निरंतर?
दरिया ने आगे से पूछा
बहना क्या होता है?
दरिया के साथ चलते
समंदर के पास पहुँचा
जो चाँद को देख था हंस रहा
उसे पूछा
इतने गहरे कैसे हुए?
समंदर कहने लगा
गहराई क्या होती है?
फिर मैंने चाँद से पूछा
इतने शांत क्यों हो?
चाँद ने हैरान हो पूछा
ये शांति क्या चीज़ होती है?

रात मुझे सपने में
दरिया समंदर और चाँद ने आ कर कहा
बंदा बनो
मुझसे पलट कर पूछा न गया
ये बंदा क्या होता है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

वृक्ष

कह दो मेरी जड़ों से
कि मिट्टी से मोह
की पकड़ ढीली ना करें
स्मरण करवा दो मेरी शाखों को
कि
रुँधी हवा में हिलते हुए
शोक के संगीत को हवा ना दे
समझा दो मेरे पत्तों को
कि माहौल की उदासी से
यूँ ही चुरड मुरड़ ना हों
ताना दो मेरी शिखर वाली कोंपल को
ओ री
तू धरती से ज्यादा ऊँची नहीं
और
आसमान की ऊँचाई की कोई सीमा नहीं

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

सिद्धार्थ

वो बहुत जल्दी
शोर से भर गया

जब आंतरिक शोर को
ध्यान का जामन लगा कर बैठाया
अंतर का सारा शोर
निथरी ख़ामोशी बन गया
वो बुद्ध हो गया

ख़ामोशी समंदर सी पसर गयी
ख़ामोशी को सारे रंग दिखे पारदर्शी
ख़ामोशी को सब शब्दों का एक सा अर्थ लगा
और सब अर्थ लगे एक ही शब्द के
ख़ामोशी को
हरेक बिन्दु में दिखा ब्रह्माण्ड
और पूरा ब्रह्माण्ड लगा बिन्दु सा
ख़ामोशी ने खिलखिलाहट सुनी
तो मुस्कराई
विलाप सुना
तो मुस्कराई
ख़ामोशी के तल पर
कविता चुपचाप बुलबुले सी उपजी
ख़ामोशी के तल पर तैरी
कोई रेखा ना खींचीं
वो शब्द हो गया

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

पंच रूप

चुपचाप बहता पानी
सुन लेता है धरती की आवाज़
साफ़ साफ़

हवा के जाने को
भी खाली जगह चाहिए

पाताल को देखने के लिए
हर समय अपने अंदर
गड्ढा खोदते रहना पड़ता है

आकाश के शिखर की ओर
जाने को
भारहीन होने की शर्त

अग्नि को प्रत्युत्तर
ताप झेल कर ही दिया जाता

तुम्हें जानने के लिए
क्या क्या होना पड़ता

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

नानक

माफ़ करना
हमारे लिए बहुत मुश्किल है
नानक की असली तस्वीर का ध्यान करना
पथ की धूल से लथपथ पिंडलियां
फ़टी एड़ियां
आंधियों से उलझी शुष्क दाढ़ी
लू, बर्फ की मार से पकी चमड़ी
गालों का चिपका मांस
चेहरे की उभरी हड्डियों के गड्ढे में
दमकती चमकती तेज़ आँखे
आँखे जो :
    परिवार को
    सरकार को
    हर संस्कार को
    तुच्छ जानती
    नकारती हैं
बहुत खतरनाक हो सकता

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

हमारे लिए असली नानक
ऐसे नानक का हम
ध्यान नहीं कर सकते
जो घरों को उजाड़ सकता
बच्चे बिगाड़ सकता
किसी काबे की ओर पैर कर
परिक्रमा में लेटने को उकसा सकता
लिहाज़ा
टाँगे तुड़वा या टाँगे कटवा सकता
तथा बहुत कुछ और गलत करवा सकता
मसलन
हम मज़हबी चिन्हों का खोखलापन नाप सकते हैं
बहाव को मोड़ने का
मर्यादा को तोड़ने का
घोषणापत्र छाप सकते हैं
ऐसे खतरनाक नानक से बहुत कतराते हैं हम
हमें तो चाहिए
सुख
सलामती
शांति
हमें तो चाहिए मीठी दुआएँ
बढ़ती बेलें
और बेलों पर लगते रुपये
हमें तो सोभा सिंह के चित्रों वाला
नानक ही उपयुक्त है

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

शांत
लीन
लक्ष्मी देवी सा उठाया हुआ आशीष भरा हाथ
हाथों से बरसती कृपा
और आँखो से झर-झर बहती कोमलता
सन सिल्की उजली दाढ़ी
गोल मटोल गोरे गुलाबी कपोल
            फेयर एण्ड लवली
सुर्ख़ टिप्सी होंठ
मुलायम जैमिनी पैर
नर्म बार्बी हाथ
दैवीय वस्त्रों का एरियली निखार

हमारे इन घरों की दीवारों पर
नानक के सोभा सिंह वाले चित्र ही टिक सकते
रास्तों को नकारने वाले
खतरनाक नानक की तस्वीर का भार
हमारी कोई दीवार नहीं उठा सकती
माफ़ करना हमें मर-मर के बनाये
            घर नहीं ढ़हाने
मन्नतें मांग कर रब से पाये बच्चे
            हाथ से नहीं गंवाने
हम असली नानक की तस्वीर का ध्यान नहीं कर सकते
माफ़ करना
●

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

हम नानक के क्या लगते हैं

नानक तो पहले दिन ही
विद्यालय को
विद्या की चारदीवारी को
रद्द कर घर लौटे
घर लौटे घर से जाने को
घर से गए
घर का विस्तार करने
        विशाल करने

हम नानक की तरह
विद्यालय को नकार नहीं सकते
नानक नाम पर विद्यालय खड़े कर सकते हैं
गुरु नानक विद्यालय
गुरु नानक महाविद्यालय
गुरु नानक विश्वविद्यालय
विद्यालयों के सुधारे सिखाये हम
ज्ञानी
विद्या दानी
घर के कैदी
भद्र जन
नानक के क्या लगते हैं

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जिन मुख लोइन नाहि

आँखविहीन आदमी
दृष्टिविहीन नहीं होता
अँधा नहीं होता
सब रंग ढंग जानता है

उसके कानों पर आँखे
नाक पर आँखें
उंगलियों के पोरों पर
पैरों पर आँखें

दो आँखें गयीं
पर खोई नहीं
करोड़ों भागों में बंट गयीं
हर भाग पूर्ण आंख
जैसे चुंबक का हर टुकड़ा पूर्ण चुंबक
खोई आँख का प्रत्येक भाग
शरीर की हर कोशिका से जुड़ गया
और बचे टुकड़ों को पीस कर
कुदरत ने उसके खून में घोल दिया

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

उसके जिस्म के अंदर बाहर
अरबों खरबों असंख्य आँखें
या पूरा शरीर ही
एक बड़ी सी आँख

एक बार मैं अपनी ओर से
एक अंधे को सहारा देने लगा
तो उसने कहा
छोड़ो जी रहने दो
मैं आपसे ज्यादा देख सकता हूँ
आपको सिर्फ स्थूल दिखाई देता
सूक्ष्म तो उसकी आड़ में छिपा रहता
मुझे सूक्ष्म के आर-पार स्थूल दिखाई पड़ता
आपकी नज़र दिन और रोशनी की मोहताज
मैं रात में भी देख लेता
मेरा दिन चौबीस घंटे का

बाबा ने तो कहा है
अंधे एह ना आखिइन ....

(गुरु नानक देव जी के वाक् 'अंधे एह ना आखिइन जिन मुख लोइन नाहि' पर आधारित।)

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

रब

वस्तुमात्र हैं जो उनका रब वस्त है
जीवित हैं जो उनका रब जीवन्त है
मस्तों का रब मस्त है
भोले भालों का रब भोला
चुस्त का रब चुस्त है

लोभी का रब चढ़ावा-खोर
दयावान का रब दयालु
बलि मांगता ज़ालिम का रब
मेहरबान का रब कृपालु

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

रोने वाले मनाते रहे रब को
प्रसन्न हैं जो उनका
रब स्वयं ही राजी

दुर्बल का रब नहीं सुरक्षित

जैसी जिंद तैसा गोबिंद
जैसी जान तैसा भगवान

सब कोई रब है आप
रब ही सब है आप
हर कोई हरि है
हर एक का एक हरि है
छोटे बंदे का रब छोटा
बड़े का रब बड़ा

सब ते बड़ा सतगुर नानक
नानक का रब सब से बड़ा
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बाबे गाते

बाबे गाते
ज़र्रे ज़र्रे से पार ब्रह्माण्ड
के प्रसारों का
हम ध्यान करें
पाँचों तख्तों गुरूद्वारों का
ध्यान करें पाठ दीदार का
कोई दखल न हो विचार का
पर बाबे गाते
हर प्रीत प्यारे
शब्द विचारे

बाबे गाते
तीर्थ शब्द विचार अंतर ज्ञान
हम कहें
बख्शो जी
श्री अमृतसर जी का स्नान

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बाबे गाते

जह जाईये तहा सुहेले

हम माँगे

बिछड़े गुरधामों के दर्शन मेले

बाबे गाते

नीची हूँ अत नीच

वड़िया सिओ क्या रीस

पर हमें चाहिये बोलबाला

बाबा जी देना आशीष

बाबे गाते

विन बोलया सब किछ जानदा

किस आगे कीचे अरदास

हमें नहीं विश्वास

बोल के बताए

बाबा जी देखो

तिल फुल भेटा संगत लायी साथ

बाबे गाते

मूर्खो

करते का इह धन माल

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बाबे गाते

मनमुख मूढ़ माया चित्त वास

माया बदले सब के लिए अरदास
कि सरबत के कारज रास करना
बुरे भी बरी ज़ालिम भी विजयी
और नकलची पास करना

बाबे गाते

जो तुध भावे साई भलीकार

पर हमारी सुनो पुकार
सब की मनोकामना पूरी करना
सिर्फ सुख हो दुखों से दूरी करना
पर बाबे गाते

नानक बोलन झखना दुख छड्ड मंगइहे सुख

बाबे गाते जाते
और मुसकराते जाते
हम टें टें टें करते जाते
दें दें दें करते जाते

उधर गाना नहीं रुकता
यहां रोना नहीं सूखता

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

भाई कन्हैया

ठंडे मीठे जल की
छबील लगाने वाले
या
लंगर परोसने वाले
किसी सेवक जत्थे का मेंबर नहीं था भाई कन्हैया
भाई कन्हैया तो अकेला भिश्ती था
गुरु की फ़ौज से भिन्न था
गुरु का प्यारा
बहुत प्यारा सिक्ख था
सिक्ख हमेशा अकेला होता
अकेला सिक्ख ही सवा लाख होता
दो सिक्ख ढाई लाख नहीं होते
तीन सिक्ख पौने चार लाख नहीं होते

गुरु ने शीश माँगा
एक तरफ से एक शीश उठा
दया राम
गुरु ने फिर शीश माँगा
दूसरी तरफ से एक शीश पेश हुआ
धर्म चन्द
शीश हमेशा अकेला होता
सिरों की भीड़ हो सकती
शीश का बहुवचन नहीं होता

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

गुरु ने जनेऊ के अलग अर्थ किये
भाई कन्हैया गुरु के उपदेश कमाता
उसने अपनी कृपाण के अलग अर्थ जाने
गुरु ने कन्हैया को कृपाण सजाते मुसकराते लाड से पूछा
क्या करोगे इस कृपाण से

भोले भाव बोला कन्हैया–
    जब कोई हत्यारा आएगा मेरी जान लेने
    तो मैं कहूँगा–
        प्यारे क्यों कष्ट देते हो
        अपनी दुश्मनी की तलवार को
        मेरी जान इस की धार पे जाये
        मेरी मौत का रास्ता गुरु के प्यार से जाये

भाई कन्हैया ना किशन था
ना सरदार कन्हैया सिंह था
भाई कन्हैया तो बस भाई कन्हैया था
अपने नाम को
अपने धार्मिक चिन्हों को
अपने अर्थ देने वाला कन्हैया
गुरु को तो बहुत अज़ीज था
पर गुरु की फ़ौज के लिए अपमान था
अकेला था पूरा सवा लाख सिक्ख था
गुरु संग रब संग एकमिक था
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

शहीदी शताब्दी

शहीदों के सरताज़
बैठे शांतमय
तपते तवे को शीत करते
बानी उच्चारते
    ब्रहम ज्ञानी के धीरज एक
मियां मीर कराह रहा
बेबसी के आँसू बहा रहा
श्रद्धालु बीबी निढ़ाल है
गला भरा बुरा हाल है
पातशाह धीरज बंधाते

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

और समझाते
साधसंग दुश्मन सब मीत
शांत चित्त मन शीत
गुर पूरे वैरी मित्र समान
उच्चारी बानी निबहे प्राण

ऐसे शहीदी दृश्य का बड़ा चित्र
शहीदी शताब्दी मनाने को
बड़े पंडाल के बड़े मंच के पीछे लगा कर
शब्द गुरु सुशोभित कर
पंथक भाषण गरजा
चुनाव पास आ रहे
इस बार हम कुर्सी पर बैठेंगे
गिन-गिन बदले लेंगे

बोले सो निहाल
चापलूस मुख से जैकारा आया
भाषण पेट में मुसकराया
मंच के पीछे
पातशाह की तस्वीर मुसकरा रही
मियां मीर कराह रहा
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

मुहिउद्दीन से क्षमा सहित

औरंगज़ेब मुसलमान नहीं था
औरंगज़ेब हिन्दू नहीं है
औरंगज़ेब बौद्ध जैन सिक्ख नहीं होगा
औरंगज़ेब का कोई मज़हब नहीं होता
जैसे रब का कोई मज़हब नहीं होता
मगर अलग अलग मज़हबों में
उसके अगणित नाम हैं

रब की तरह ही औरंगज़ेब का एक
निर्गुण स्वरूप होता है
जो सर्वव्यापक है

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

थोड़ा बहुत सारे आस्तिकों नास्तिकों के हृदय में बसता है
हजूम से आगजनी, मारधाड़, दंगे, कत्लेआम करवाता है
रब की तरह ही औरंगज़ेब का सरगुण स्वरूप समय समय पर अवतार धारण कर
किसी राजा का सहयोगी, सलाहकार, सरपरस्त, सारथी बनता है

नाम के हिसाब से औरंगज़ेब खुद को तख़्त का श्रृंगार कहलाता है
मगर असल में औरंगज़ेब किसी
ऊंचे पद पर लगा कलंक होता है
जो सगे बाप का भी सगा न होता है
औरंगज़ेब भाइयों के खून का प्यासा होता है
औरंगज़ेब इल्म, अदब, हुनर का बैरी होता है
उसे मुस्कान मोह मोहब्बत से नफ़रत होती है

दिखने में ज़्यादा मज़हबी दिखता है
औरंगज़ेब देता है भ्रम
सन्त सूफी साईं सन्यासी होने का
मगर उसे संतो सूफ़ियों से हमेशा खतरा होता है

चलो पहले अपने अंदर बसे
औरंगज़ेब को जानें पहचानें और खत्म करें
फिर बाहर बिफरे घूमते औरंगज़ेब के अवतारों को
मोहब्बत जिंदाबाद कह ललकारें

●

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कवि या कविता

कोमल कविताएं लिखने वाले
कवि को
सुबह सवेरे किसी बात पर
मेरा लतीफ़े सा जवाब डस गया
पारा भी ऊपर चढ़ गया
सातवें आसमान से बरस पड़ा
वक़्त अच्छा था या कोई और बात
मेरा दिल न ज़रा भी डरा
मैं मुसकराया
वो और तिलमिलाया
ज़मीन पर पैर मार
उसने नफ़रत से थूक दिया
मैं बिना छिपाये हँस दिया
उसने कहा
बहुत बड़ा बना घूमता था
सारा नंगा हो गया तू तो
आखिर उसने थूका मेरे मुँह पर

घर आ गया
कभी सोचूं अच्छा हुआ
गुस्सा पी लिया

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कभी लानत भेजूँ खुद पर
क्यों न गुस्सा खा लिया

सारा दिन
चढ़ती उतरती रही
जब शाम हुई
कवि की कोमल कविताओं की किताब को निहारा
प्यार से पकड़ा
पन्ना पन्ना
अक्षर अक्षर पढ़ा
कोमल कविताओं ने मुझे
कोमल कर दिया
दिल में कवि के लिए प्यार
ऊपर तक भर गया

तलवार को तो
व्यक्ति का क्रोध भी
उठा सकता है
पर किताब व्यक्ति को
खुद उठानी पड़ती है
खुद पढ़नी पड़ती
मैं अपनी शूरवीरता पर खुश हूँ

हाँ एक बात और
कविता पढ़ने वाले की होती

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ख़तरा

मेरे धन माल, पहचान को
और जान को
किसी से भी हो सकता है ख़तरा
मगर मेरे ईमान को ख़तरा है सिर्फ मुझसे
मेरी जात जमात को तो ख़तरा हो सकता है किसी से भी
मगर मेरे धर्म को ख़तरा है सिर्फ मुझसे

जिस दिन मैंने बताया अपने धर्म के लिए ख़तरा किसी और से
तो समझ लेना
कि मेरा कोई धर्म नहीं
कोई ईमान नहीं
मैंने किसी और चीज़ का नाम धर्म रख लिया है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

सूखी बावड़ी

सूरज ढल जाने के बाद
अंधेरा तो होता है
रात नहीं होती
फिर लौ लगने के बाद
चढ़ जाता है सूरज
पर दिन कभी नहीं होता
समय तो चलता है
अपनी चाल
पर जिंदगी रुक जाती

डूब मरने के लिए
आदमी उतर आता है
अपने अंदर की बावड़ी की
अँधेरी सीढ़ी से
पर वहां डूबने के लिए तो क्या
आँख पर छींटा मारने भर भी
पानी नहीं होता
और बाहर
वापिस लौट आने की हिम्मत नहीं बचती

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

आँखे खोलने पर दिखता है
अँधेरा ही अँधेरा
आँखे बंद करते ही
दिखती हैं आग की लपटें

अंधेरे में खो कर
इस आग में पूरा जल जाना
चाहता है आदमी
पर आग और अँधेरा कब
इकट्ठे होते

दूर कहीं जोगी
गाते सुनाई देते
पर समझ नहीं आते
उनके बोल
पास खड़ा रोता कुत्ता
बातें करता लगता है
सारी दुनिया की
पगडंडियां, रास्ते
छोटी बड़ी सब सड़कें
नाभि से हो कर
सीने में विलुप्त हो जाती
समय तो चलता रहता
पर सेल् खत्म होने से घड़ी रुक जाती
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

धरती खड़ी है

गाड़ी में अकेले सफ़र करते
मैं उदार होता हूँ
घर दफ़्तर या बाज़ार में होने से
सहयात्रियों से ईर्ष्या नहीं
बातें करता हूँ इधर-उधर की
बातों के पीछे छिपने का तनाव नहीं
खुलने का चाव होता है

कभी बिस्किट पेश करता हूँ
मुसकराता हूँ
कभी अपने बच्चों की तस्वीर दिखाता हूँ
सरोकार बढ़ाता हूँ
सीट के नीचे से चप्पल निकाल के देता हूँ

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बाथरूम जाने के लिए राह देता हूँ
आराम से लेटने की सलाह देता
दूसरे का अनुकरण और अपनी तारीफ नहीं करता
जितना अच्छा होता हूँ
उस से बढ़कर अच्छा होने की कोशिश करता हूँ
किसी का छीनने या अपना बचाने की औपचारिकता नहीं होती

ऐसा मैं सिर्फ चलती गाड़ी में ही होता हूँ
धरती पर नहीं होता
धरती पर होते हुए भी
होता तो हूँ सफ़र में ही
धरती का तल हज़ार मील की रफ़्तार से घूमता
हज़ारों मीलों की रफ़्तार से ग्रहपथ पर दौड़ती धरती
पर मेरा मन नहीं मानता
मेरे मन में तो रुकी है धरती
चढ़ते छिपते सूर्य चाँद सितारे
घूमते लगते हैं रुकी हुई धरती के गिर्द
किताबों में लिखे जैसी धरती
घूमती चलती उड़ती नहीं लगती
तभी किताबों में लिखे जैसी
या गाड़ी वाली ज़िन्दगी
मेरी नहीं बनती
जब मैं धरती पर होता हूँ

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

मामी मरी तो

जीते जी मामी तरसेम कौर
मुझे भूली तो ना थी
पर उसका कितना कुछ भूला हुआ था
आज मरी तो याद आया

याद आया उस का माँ को बीबी पाशी कहना
उसका आये मेहमान से
बाल बच्चों का हाल पूछने का सलीका
याद आये उसके लम्बे पतले हाथ
घर का कामकाज करते
या सिर का पल्लू सम्भालते
उसका कानों के आगे तक पल्लू रखना
याद आया

ये भी याद आया कि मामी के बाजू
कभी कमर के दोनों ओर सीधा लटकते न देखे थे
खड़ी बातें करती मामी के हाथ भी

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

एक दूसरे को छूते रहते
या आधे जुड़े रहते

याद आया उसका ना घूरना, ना डाँटना
ना ऊँचा बोलना, ना बहस करना
याद आया उसका त्यौरी रहित माथा

याद आई
उसमें से ननद या जिठानी वाले
लक्षणों की अनुपस्थिति
मामी में कभी सास ना झलकी थी
मामी कुछ ज्यादा ही मामी थी

याद आई उसकी निर्लिप्तता सब हंगामों से
उसका अनजान होना कई आम बातों से
आज मामा ने कहा
 गृहस्थी निभाने को बड़ी सयानी थी
तो याद आया
आये गए पर मामा का
मामी को भोलो कह कर छेड़ने का स्वांग करना

ये सब मुझे क्यों भूला हुआ था
जिसे याद करवाने को
मामी को मरना पड़ा

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जुगती

कई दिनों से चाहते हो तुम
मुझसे आ मिलना, बातें करना
पर हौसला नहीं तुम में
कूदने का
तैरने डूबने का
दरमियां जो उछल उछल बहता है
दर्द का दरिया
बेइंतहा

थोड़ा करो इंतज़ार
मैं ही तुम से आ मिलता हूँ
तुम्हारे पार
लांघ कर दर्द का दरिया
जो बहता है बीच में
इस में भीगे या डूबे बगैर
हँसता मुसकराता
साबुत
दर्द का दरिया
शर्मसारी में डूबा
ज़रा हट के बहता रहेगा

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी तो शायद
लिसलिसी मिट्टी के घोल से कुश्ती करने का नाम है

ज़िन्दगी कभी निर्वात में सांस लेने जैसी होती है
और कभी
अबोध बालक के नर्म होंठो पर मीठे चुंबन सी
कभी ये मजबूरियों और पश्चाताप के पाटों में पिसने सी होती है

कभी समय की खूंटी पर उल्टे लटकते हुए
उघड़ी देह पर
हादसों के चाबुक सहना होती है
और कभी
उमंगों की ईंटों पर
अहसासों की गीली मिट्टी से
लिपाई करनी होती है

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कभी ज़िन्दगी शीत ऋतु में
बर्फ की दीवार में
चुनवाये जाने सी होती है
और कभी
ज्येष्ठ आषाढ़ में नंगी पीठ पर धूप सेकने सी।

कभी ये मरुस्थल में खड़े
तन्हा वृक्ष की आह होती है
और कभी
झूमते पेड़ों के हरे पत्तों का संगीत।
कभी ये अपने स्वयं से खुद को
तलाश करने जैसी होती है
और कभी
दूर बैठे किसी अपने की याद में
खो जाने सी।

ये अकेले दिल के ज़ख़्म का नासूर भी हो सकती है
और दो दिलों की एक धड़कन भी।

कभी ज़िन्दगी ओस भीगे घास पर
टहलने सी होती है
और कभी
पिघले तारकोल पर नंगे पांव सरपट दौड़ने सी।

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ज़िन्दगी उस घटना सी भी हो सकती है
जब किसी तूफ़ानवश
दो पेड़ों की टहनियाँ
आपस में उलझ जाती हैं।

ज़िन्दगी हथेली पर छपी
लंबी उम्र की रेखा नहीं
ज़िन्दगी भूत को याद करते
और भविष्य का सपना लेते
वर्तमान का नाम है।

ज़िन्दगी महबूब से होने वाली
अगली मुलाकात की
आँखों में लटकती प्रत्याशा है।
ज़िन्दगी उम्र के हर आकार के कैनवस पर
अनगिनत रंगों का व्यवस्थित होते हुए भी
अव्यवस्थित स्पर्श है।
ज़िन्दगी भगवान सी अनंत है
और ब्रह्माण्ड सी विशाल।

कहने को तो ज़िन्दगी कुछ भी हो सकती है
पर है ज़िन्दगी
लिसलिसी मिट्टी के घोल से कुश्ती करने से
खेल का नाम।

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

दिवस रात

रात की कोख से पैदा होता
 चहकता
  महकता
   खिलखिलाता
    सुनहरा दिन
वक्त के साथ दिन बड़ा होता
माँ से दूर होता जाता
यहाँ वहां भटकता
सौ पापड़ बेलता
अनेकों कुफ्र तौलता
टक्करें मारता
थकता, हांफता टूटता
मुँह लटका कर
शाम के द्वार पहुँचता
दम मांगता
पनाह मांगता
शाम बाँहों के दरवाज़े खोलती
गिरते को थामती
आँचल में संभालती

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

माथा पोंछती
बालों में कोमल उंगलियो से कंघी करती
होंठो से आँखे चूमती
आँखों से पूरी देह पर स्नेह बरसाती
तारों की चुन्नी ओढ़ती
चाँद का टीका लगाती
दिन को अपने रंग में रंगती
अंगो को अंगती
कुँवारी शाम रात सुहागन बनती
लौ को अपनी कोख में संभालती
दिन ठंडा शांत हो जाता
उसकी लीला समाप्त होती
आँखे मूँद लेता
रात उदास होती
निराश न होती
लोरी गाती, कोख को पोसती
पुत्र जनती पर खुद न रहती
नरम गोरा दिन चढ़ता
तपता जलता
बड़ा होता
यहाँ वहाँ भटकता
सौ पापड़ बेलता
....
बिल्कुल बाप सा
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अमेरिकी टॉवर गिरने पर

आग के रुमाल से आँसू पोंछे जायेंगे
अमन की लाश पर अमन मार्च होंगे
धर्म के नाम पर अधर्म का परचम झूलेगा
बेअसूली ही सिर्फ एक असूल होगा
आतंकवादियों का नारा
आओ इकट्ठे हो कर
आतंकवाद को कुचले
उनके लिए आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने का अर्थ है
बदला
तबाही

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

और उनके लिए आतंकवाद का दूसरा नाम है
ओसामा बिन लादेन
मेरे पड़ोसी के लिए
आतंकवाद का अर्थ है
पाकिस्तान
मेरे पड़ोसी देश के लिए
आतंकवाद का अर्थ है
हिन्दुस्तान
पर आतंकवाद तो कोई प्रेत है
जो हमें
टीवी के आगे बांध कर बैठाता है
अख़बार पढ़ाता है
ताज़ा और स्पॉन्सर्ड समाचार
की लत लगाता है
मगर आँखों की पुतलियों में छिपे बैठे
प्रेत को कैसे ढूंढेंगे
और कैसे मारेंगे तोपों टैंको और मिसाइलों से

भोजन पकाती, खिलाती,
गुनगुनाती गृहणियां
और
गलियों में दौड़ते कूदते बच्चे
बताते हैं
कैसे लड़ना है आतंकवाद के खिलाफ

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ये समय

ये समय
कुछ करने का या
मरने का नहीं है

ये समय
लड़ने का
या अड़ने का नहीं

ये समय
कुछ जानने का
या मानने का नहीं

ये समय
किसी प्रतिज्ञा का
या अवज्ञा का नहीं

ये समय तो
बाज़ार से चीजें खरीदने का है
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

नौकरशाही

बड़े शहर के बड़े रेलवे स्टेशन के
उच्च श्रेणी प्रतीक्षालय के बाहर
टूटी फूटी मृतपाय
पुरानी कुर्सी पर बैठी त्यौरी बेख़बर है
उसे किसी प्रतीक्षारत की प्रतीक्षा नहीं

त्यौरी आने वाले यात्री से
यात्रा पत्र का विवरण भरने का आदेश देती
तनी हुई ऊँगली
प्रत्येक रिक्त स्थान भरने के लिए चेताती
एंट्री किये बिना अंदर घुसने वाले को
काटने को दौड़ती

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

निचले दर्जे का यात्रा पत्र देख
जब त्यौरी अंगारे बरसाने लगती
तो
प्रतीक्षालय के माथे पर टँगी
उच्च श्रेणी की तख़्ती के अक्षरों से मैल चमकने लगती
तनी उंगली तख़्ती की ओर संकेत करती
निचली श्रेणी के यात्रा पत्र को
लज्जित सा कर आगे भेज देती

स्टेशन पर छिटपुट बेचने वाले
छोटे लड़के के आने पर
त्यौरी कुछ ढ़ीली होती
उस बेटिकट को तयशुदा तरीके से
अंदर घुसने देती

त्यौरी सरकारी है
पक्की सरकारी
चतुर्थ श्रेणी की हो कर भी
उच्च श्रेणी से भी ऊपर है
ऐसे उच्च श्रेणी का दर्जा पांचवा है
बाकी श्रेणियों का दर्जा क्या है
ये उच्च श्रेणी प्रतीक्षालय के अंदर स्थित
गुसलखाने की हालत से पूछ सकते हैं
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

तरक्की

उसके सपने में काली आंधी चली
उसने अधजगे से उठ कर देखा
कि उसके पत्तों से
ओस की सारी बूंदे
झड़ चुकी हैं
सूख चुकी हैं
कि वो बूढ़ी कुर्सियों के बीच

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

गड़ा हुआ है
कि वो कविता की तरह झूमना छोड़ कर
हवा से बातें करना रोक कर
सर्विस बुक के पन्ने से चिपक गया है
कि उसके मन की छत से
पानी टपका
और वो जलते जलते सुलगने लगा
मेले वाली जगह की
बेरौनकी और बेतरतीबी
उसकी अनकही अनलिखी कविता की गवाह है
आजकल वो वो नहीं
और आप भी उसे आप नहीं लगते
उसकी बाहें होती थी कभी ब-हु-त लंबी
नज़र की पहुंच जहां तक
शायद उस से भी लंबी
करती थी जो आलिंगन
चाँद सूरज का
जग का रब का
सब का
सिकुड़ के रह गयी बाहें अब
बाहों से भी छोटी
जो अपने वजूद को भी
सिर्फ पेट भर आलिंगन करती हैं
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बच्चा

बच्चा
घर का एक जीव ही नहीं होता
सब लोगों की जान होता है
बच्चा जब घर में होता
एक कमरे में ही नहीं होता
घर के हरेक कोने
कण कण में होता है बच्चा
वह सब चीजों में चमकता
सब वस्तुओं में बसता
टीवी में, ट्रंक में
मेजों-सेजों में
किताबों - कुर्सियों में
परदों - पंखो में

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बिछौनों – खिलौनों में
बच्चे के साथ
घर सांस लेता
दीवारें धड़कती
छतें खनकती
और खिड़कियाँ हंसती

बच्चा जब बीमार होता
पूरा घर बीमार होता

बच्चे के बगैर
रात में चाँद नहीं चमकता
तारे नहीं टिमटिमाते
घास पर ओस नहीं पड़ती
आंगन में धूप नहीं खिलती

घरों को बसने के लिए
आदमी को रसने के लिए
बच्चों का साथ चाहिए
या फिर आदमी खुद ही
बच्चों सा आप चाहिए

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ख़ून पसीना स्याही

मज़दूर ईंट पत्थर उठा रहे
राजमिस्त्री चिन रहे
मेरा स्याही की कमाई से
मकान बन रहा धीरे धीरे

साथ साथ मैं भी बन रहा हूँ
बन कर मकान आदमी को नया जहान देता
बनता हुआ मकान आदमी को बड़ा ज्ञान देता

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

स्याही की कमाई से बनते मकान ने
मुझे बताया
कि किराए के मकान की दीवार में
कील ठोकने पर
मकान मालिक का सीना क्यों फटता था
उसका मकान पसीने की कमाई का था

मेरे बच्चे के मामूली चोट लगने पर
पत्नी की आँखों से
छम-छम आँसू बहते
तो मैं चिढ़ता
रोने की क्या बात हुई

पर अब मैं चिढ़ता तो मुझे समझाता
स्याही की कमाई से बन रहा यह मकान
कि चिढ़ मत भले आदमी
बच्चे माओं के खून की कमाई से बने हैं

बन कर मकान आदमी को नया जहान देता
बनता हुआ मकान, आदमी को बड़ा ज्ञान देता
●

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कोख में कत्ल होती लड़कियां

कवि जी,
कौन से कत्ल की बात करते हो?
उल्टी बहती हवा के साथ
अपनी सांसे भी जुड़ी है

अगर तुमने कभी माँ की गाली दी है
तो इस कत्ल के ख़िलाफ़ कविता लिखने की
कोई जरूरत नहीं

अगर कभी बहन की गाली दी है
तो इस कत्ल के ख़िलाफ़ कविता का
कोई अर्थ नहीं

अगर कभी दी है बेटी की गाली
तो इस कत्ल के ख़िलाफ़ कविता लिखने का
तुम्हें कोई हक़ नहीं

कोख के अंदर की लड़कियां
जब हवा में फैली
माँ बहन बेटी की गालियाँ सुनती हैं
तो पैदा होने से इंकार करती हैं
और ममता की मूर्त माओं को
हमारी झूठी कविताओं की जगह
अजन्मी बेटियों की
सच्ची जिद्द के आगे झुकना पड़ता है
कवि जी, कौन से कत्ल की बात करते हो?

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

दाता

उन्होंने काट कर हमारे हाथ
कर के बोटी बोटी
थाली में खूब परोसी
हमारे सामने रखी
शोख अदाओं के साथ
हम जयजयकार करते रहे
कटी बाँहों के साथ

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

बुरकी (निवाला)

बुद्धिमान की ताकत कहती है
नहीं, सच्ची बात ये है
ताकतवर की बुद्धि कहती है
कि दुश्मन को किसलिये मारना है

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

उसके अंदर की दुश्मनी को मारो
और दुश्मनी को मारने के लिए किसी तीर की,
शमशीर की
जरूरत नहीं होती
बस घुड़की चाहिए
बात न बने
तो बुरकी चाहिए

घुड़की से
आंतें कांप कर पानी छोड़ जाती
बुरकी से
उठे हुए हाथ हिलती पूँछ बन जाते हैं
बुरकी और घुड़की से
दुश्मन के अंदर दुश्मनी ही नहीं
और भी बहुत कुछ मर जाता है

मगर हम
तगड़े की घुड़की से नहीं डरे
ना हमने उसकी बुरकी पर लार टपकाये
हमारे अंदर किसी और शय का वास है
जो बुरकी और घुड़की से नहीं मरती
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

23 मार्च

शहीदे आज़म के शहीदी दिवस की
छुट्टी न हो
ये बात नहीं सहेंगे
रोष हड़ताल करेंगे
क्लास का बायकाट करके
ना पढ़ने, पढ़ाने देंगे
और ना पढ़ेंगे
उस शहीद के शहीदी दिवस पर
जो अंतिम घड़ी तक
पढ़ता रहा था

●

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

भगत सिंह

मेरे दादा के जन्म के समय
तुम बारह बरस के थे
शहीदों के खून से भीगी
जलियाँ वाला बाग की
मिट्टी को नमन करते हुए
दादा बारह बरस के हुए
तुम 24 साल के नवयुवक थे
तुम्हारी शहादत का समय था

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

दादा जवान हुए तब भी
तुम 24 साल के नवयुवक थे

मेरे पिता के जवान होने के समय भी
तुम 24 साल के नवयुवक थे

मैं 24 साल का हुआ
तब भी तुम 24 साल के नवयुवक थे

मैं 25, 26, 27... 37... 47 साल का हुआ
तुम 24 साल के नवयुवक ही रहे

मैं हर जन्मदिन पर बुढ़ापे की तरफ एक वर्ष बढ़ता हूँ
तुम हर बलिदान दिवस पर 24 साल के नवयुवक ही होते हो

यूँ तो आशीष सब माएं ही देती हैं
चिरंजीवी हो चिरयुवा हो
पर तुम सचमुच जिन्दा हो 24 साल के नवयुवक
सदा जवान हो
और जिन्होंने अभी पैदा होना है
उम्र में उनके भी समान हो

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

आज़ादी

चिड़िया ने अपनी आज़ादी की
पहली या दूसरी लड़ाई नहीं लड़ी
ना तीसरी लड़नी है
फिर भी चिड़िया गुलाम नहीं

चिड़िया ने अपनी आज़ादी की
वर्षगांठ या जुबली नहीं मनाई
ना शताब्दी मनानी है
फिर भी चिड़िया गुलाम नहीं

चिड़िया को किसी के विरुद्ध
बोलने या लिखने की मज़बूरी नहीं
क्योंकि चिड़िया आज़ाद है
चिड़िया कभी आज़ादी के बारे में भाषण नहीं देती
चिड़िया कभी आज़ादी के बारे में भाषण नहीं सुनती

ना छीन के खाती है
ना छिप कर प्यार करती है
गुलामी और सभ्यता का अंतर समझने के लिए
कोई चिंतन नहीं करती
क्योंकि चिड़िया आज़ाद है
चिड़िया कितने कुछ से मुक्त है
ना कोई ताई
ना भौजाई

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

ना कोई खुदा
ना मदर इन लॉ

सोचते-सोचते
हमारा भी चिड़िया होने को मन करता
पर चिड़िया की जिंदगी भी कहाँ
कम है दुश्वार
सौ झंझट अंडे घोंसला बच्चे परिवार
आंधी तूफ़ान ओले बरखा मूसलाधार
चिड़िया से भी पीछे जाना पड़ेगा आज़ादी खातिर
पीछे से पीछे
अमीबा तक
उस से भी पीछे
अपने कुछ भी ना होने तक

ना बाबा ना
पीछे नही
आगे ही चलते हैं
चिड़िया इतनी आज़ाद नहीं कि
कुछ और होने का सोच सके
आदमी होने का सपना ले सके
हम कुछ भी होने का
सोच सकते है
सपना ले सकते हैं

चलो आज़ादी से आदमी हो जाएं
रब होना चाहें।

●

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कौन

पानी और प्यास
कौन किसको पीता है?
भोजन और भूख
कौन किसे मिटाता है?
नारी और नर
कौन किसे ....?

प पानी
प्यास
भ भोजन
भूख
न नारी
नर

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अजनबी

हम तेल रीते जहाज़ से
बेगाने टापू पर
पैराशूटों से उतरे यात्री हैं
पैराशूट
जिस से खतरे के समय
किसी धरती पर सुरक्षित
उतरा जाता है
वापिस अपनी धरती पर
लौटा नही जाता

हमारा माइक्रोवेव सेट भी जहाज़ में छूट गया है
और पिछले बेख़बर हैं
कि आजकल हम
सोते जागते
और जागते सोते है
कविता कभी-कभार सपने में आती है
सपना टूटने पर
खोई हुई कविता के पीछे भटकते
हम, जो अजनबी हैं

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

खिड़की के अंदर और बाहर

बरसात का मौसम
सफर में मेरे साथ कोई नहीं
बगल वाली सीट खाली है
जिस से मुझे बहुत सुविधा है
मेज़ की तरह
इस पर अख़बार किताब या पैन रख सकता हूँ
पानी की बोतल मोबाइल चश्मा
और भी छोटा मोटा कुछ
लेकिन छोटा मोटा किसी की अनुपस्थिति नहीं भरता

सुविधाएं
मोहब्बत से बढ़ कर नहीं हो सकती

गाड़ी की खिड़की से
बाहर ही देखते रहने को मन करता है
दूर तक फैले नज़ारे को
हरे भरे खेत मैदान चरागाह
फसलें वृक्ष बेल बूटे
संतुष्ट और प्रसन्न अच्छे लगते हैं

धरती नमी से तृप्त है
जैसे आत्मा तृप्त होती
मोहब्बत से

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

दूसरी तरफ़

धरती पर अपनी तरफ खड़े हुए
दूसरी तरफ के लोग
उल्टे चलते फिरते लगते

धरती के दूसरी ओर जा कर देखें
तो सब ठीक ठाक लगता
सीधा सही साधारण
बिल्कुल अपनी तरफ जैसा

दूसरी तरफ दूसरी होती
उल्टी नहीं होती

दूसरे को ठीक जानने के लिए
उसके पास जाना पड़ता
उसकी जगह पर जा कर देखना पड़ता
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

कवि अकेला कविता नहीं लिखता

कितनी गर्मियां सर्दियां
दृश्य और आवाज़ें
अनुभव बोध
स्वाद और सौन्दर्य
कितने रास्तों से
कवि तक आते
मिल कर उस से कविता लिखवाते
कवि अकेला कविता नहीं लिखता

जो सब कुछ को अपने तक आने देता है
अपने द्वारा कविता लिखने देता है
कवि कहलाता है
वैसे कवि अकेला कविता नहीं लिखता

कवि जब कविता गाता
सुनाता
पढ़ाता
शाबाशी, प्रशंसा, दाद बटोरता
पर इस सब को
उन सब तक नहीं पहुँचाता
जो उस के साथ मिल कर कविता रचते
तो कवि सब से बड़ा भ्रष्टाचारी है

मगर इस भ्रष्टाचार की ख़बर
किसी अख़बार में नही छपती

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अत्याचार

अत्याचारी पक्ष के लिए
अत्याचार अत्याचार नहीं
सबक सिखलाई होता
सुधार भलाई होता
क्रोध व दुख का इज़्हार होता
फ़र्ज धर्म का कारोबार होता
या मस्ती मज़ा होता है
अत्याचारी के मुताबिक तो
ज़्यादा से ज़्यादा
अत्याचार
बदला या सज़ा होता

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

अत्याचार के असली अर्थ तो
पीड़ित ही जानता

अत्याचार की विधियाँ नहीं केवल
बम गोली खंज़र चाबुक मारना चाँटा लगाना
सूली चढ़ाना जिंदा आग में जलाना
जेल में बंदी करना
टुकड़ा टुकड़ा काटना

अत्याचार के ढंग हो सकते
त्यौरी चढ़ाना
लतीफ़ा सुनाना
आँख भरना
पाठ करना
ताकना
हंसना
बोलना
न बोलना
अनगिनत और ढंग

अपने किये को
कोई ना कहता अत्याचार
पर हर कोई सहता अत्याचार
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

रेप

बच्चों की बात नहीं हो रही
रेप जवान तन का नहीं
मन का होता है
किसी मन की मर्जी के ख़िलाफ़
धक्केशाही का अपराध

वाया तन हुए रेप की
ख़बर छपती
अक्सर

मन के सीधे रेप की
कविता छपती
कभी-कभी कहीं-कहीं

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

नाजायज़

कहते हैं
इश्क़ और जंग में सब कुछ
जायज़ है
पर जनाब, आजकल सब से ज़्यादा सब कुछ जायज़
तो सियासत में है
क्यों ना हो
सियासत में दोनों हैं
नहीं, आजकल सियासत में दो ही हैं इश्क़ और जंग
इश्क़ कुर्सी उर्फ सत्ता से
और जंग कुर्सी के दूसरे आशिक़ों से
पर याद रखो
जिस सियासत में सब जायज़ हो
वो दुनिया की सब से नाजायज़ चीज़ है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

और परे

तुम्हें देखने के लिए
बार बार देखना पड़ता
सुनने के लिए
बार बार सुनना पड़ता
मिलने के लिए
बार बार मिलना पड़ता
हर बार कशिश
और बार की
मिलने से पूरा मिलन न होता
बिछुड़ कर पूरा बिछुड़ न पाते

धरती घूमती रहती
पर उसे नहीं पता
कि अपने गिर्द
या तुम्हारे गिर्द

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

आकर्षण

तेरे आकर्षण में
अपने आप से
अभी एक ही कदम आगे बढ़ा हूँ
यहाँ हवा रंगदार है
धूप संगीतमय
और आकाश खुशबूदार है

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जोड़-तोड़

उससे जुड़ने का चाव
मैंने अपने घर के बगीचे से
फूल तोड़ कर दिया
उसने मुसकरा कर स्वीकारा
और कुछ कहने सा
प्यार से पूछा–
यह अपनी जगह पर
ज्यादा सुंदर नहीं लगता था?
मैं
घर से और भी जुड़ गया
और उस से और तरह से जुड़ गया
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

छुअन

तुमने प्यार से
अपने दोनों हाथों के बीच
मेरा हाथ लिया
दबाया सहलाया

करामात हुई
मेरे दोनों हाथों में से
उदासी की रेखा लुप्त हो गयी

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

निश्चित

- क्या तुम खुश हो?

○ हां, तुम्हें पता तो है
कि मैं खुश हूँ

- तुम्हें कैसे पता कि मुझे पता है?

○ तुम वही सवाल तो करते हो
जिसका मेरी ओर से मिलने वाला उत्तर
तुम्हें पहले ही पता हो

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

माटी कहे कुम्हार से

मां
तूने कायनात से
हवा पानी मिट्टी का कण कण ले कर
मुझे जोड़ा
अपनी देह के चाक पर आकार दिया
और अंदर के ताप से पकाया
मैं तेरे कारण पूरी कायनात का होना हूँ

सच बताऊँ
एक सच मौन हो पथरा गया मेरे अंदर
पथरी बन चुपचाप बैठा है
जिसके बोलने से ज्वालामुखी फट सकता
आ सकता भूकंप तूफान सुनामी

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

इस खौफ़ से
मेरा सृष्टि से रिश्ता झूठा हो गया है
क़ायनात से टूट रहा हूँ
जिस से कण-कण ले
तूने जोड़ा मुझे

तू नहीं चाहेगी कि
मुझे मारे
खौफ़ रोग का सूखा

तुझे अपना पथरीला सच सौंप रहा हूँ
दिल करे अपने पास संभाल रखना
दिल करे
अपने तरीके से
अपने सलीके से
इस का कण कण
ज़ाहिर कर देना सारी क़ायनात को
जिस से कण कण ले
तूने जोड़ा मुझे

तेरी मरजी है
तेरे कारण मैं सारी सृष्टि का होना हूँ
•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

तुम्हारे लिए मैं

इस पल
तुम्हारे लिए मैं
इस तरह का प्रेम क्यों नहीं हो जाता
जो बीते सब पलों से
सब यादों से
चूस ले दर्द
कि सब यादें
सारा इतिहास
इस प्रेम क्षण तक पहुंचने की
समय के लहरों भरे तल पर
तय की यात्रा लगे

इस जगह
तुम्हारे लिए मैं
इस तरह का प्रेम क्यों नहीं हो जाता
जैसे मिट्टी खाद और सीलन में खड़े
काँटो भरे तने का
ताज होता
ताज़ा फूल

इस तरह का होना
मेरा नसीब क्यों नही

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

प्रेम

खुली आँखों से
जितना कुछ दिखता है
नज़र की सीमा तक
तेरे ही आकार का विस्तार है

बन्द आँखों से
अंदर बाहर तेरी असीमता महसूस होती
सारी भटकन तेरी सारी असीमता को
एक बार छू लेने की

सारे हल्के भारी शब्द तेरी परिक्रमा करते
प्रेम गीत बनना चाहते
सारे रंग एक दूजे में घुल मिल कर
एक रंग बनना सोचते

प्रेम से आगे कोई प्रवचन नहीं जाता
इस संकल्प का कोई विकल्प नहीं
तृष्णा को उपदेश की सांकल से बांधने की जगह
तेरे अंतर तक मिलाने वाले
प्रेम के आदि मार्ग पर चल के
तुमसे मिला के अंत करना चाहता हूँ

ये मैं से तू का
प्रेम मार्ग
मेरे अंदर को तेरे सब कुछ से जोड़ता

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जाते-जाते

माँ-बाप के खर्च कष्ट
और मीठे चुंबनों का ऋण
बच्चे अपने बच्चों को लौटाते हैं
समय की चाल भूत से भविष्य की ओर
और बुढ़ापा...
समय की चाल पर गिला करने का नाम

•

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library

जसवंत ज़फ़र की पुस्तकें

Digitized by Panjab Digital Library

B-089564

जसवंत ज़फ़र जी की कविताओं से मैं एक पाठक की तरह ही रूबरू हुई थी मगर उनकी कविताओं की सरलता और स्पष्टता ने मुझे उनका प्रशंसक बना दिया।

जसवंत ज़फ़र की कविता नानक मेरी सब से पसंदीदा कविता है, हमारी जड़ हो गयी चेतना पर प्रहार करते हुए वो लिखते हैं:

हमारे इन घरों की दीवारों पर
नानक के सोबा सिंह के बनाये चित्र ही टिक सकते
राहों को रद्द कर चलने वाले
खतरनाक नानक की असली तस्वीर का भार
हमारी कोई दीवार नहीं सह सकती।

सच कहूँ यही कविता थी जिसे पढ़ कर मुझे लगा कि इस कविता का केवल पंजाबी पाठकों तक सीमित रह जाना नाइंसाफी होगी और मैंने जोश में ही इस कविता का अनुवाद कर डाला।

जसवंत ज़फ़र 'जब कवि अकेला कविता नही लिखता' कहते हैं तो वह सृजन, संचार और काव्य प्रकिया को पाठकों से जोड़ते हैं, केवल बौद्धिकता या दार्शनिकता तक सीमित नही करते। इस अनुवाद में मैंने कोशिश की है कि कविताओं की मौलिकता और गुणवत्ता बनी रहे और आशा करती हूं कि हिन्दी पाठक मेरे इस प्रथम प्रयास का स्वागत करेंगे और ज़फ़र जी की कविताओं का भरपूर आनंद उठाएंगे।

श्रीमती कोमलदीप कौर भारतीय रेलवे में कार्यलय अधीक्षक के पद पर लुधियाना में कार्यरत हैं। वे अपने स्कूल एवम कॉलेज के समय से कविता लेखन कर रही हैं। विभिन्न कवि सम्मेलनों और आकाशवाणी से उनके नियमित काव्य पाठ प्रस्तुत होते रहते हैं। उनकी कविताएं अनेक पत्र-पत्रिकाओं जैसे- नागमणि, आगमन, प्रतिमान, त्रिशंकु और रेलवे पत्रिका में छप चुकी हैं। आगमन समूह के काव्य-संग्रह कस्तूरी कंचन एवम पुष्पगन्धा में उनकी कविताओं का संकलन भी सराहा गया है। उनको आगमन साहित्यिक सम्मान 2016 मिल चुका है। रेलवे विभाग के फ़िरोजपुर मंडल द्वारा आयोजित विभन्न काव्य सम्मेलनों में काव्यपाठ कर वे पृस्कृत हो चुकी हैं।

प्रकाशक

A Group of
Chetna Parkashan
Ludhiana | Kotkapura | Canada | USA

ISBN 81-94932635-7
9 788194 932635

Jeeti Jaagti Baat

₹ 200/-

Original with;
Jaswant Singh Zafar
Digitized by;
Panjab Digital Library